ISSN : 2319-8095
Progressive Research Journal
Vol.1 No.1 December 2012

आधुनिक समाज एवं शैक्षिक संस्थाओं में पुस्तकालय की भूमिका

कुँवर आनन्द सिंह*
डा0 श्री प्रकाश मिश्र **

आधुनिक जीवन में मानव के विकास और प्रगति के लिए बहुत सारे प्रयत्न किये जा रहे हैं और इन सभी प्रयत्नों तथा गतिविधियों का आयोजन या संचालन किसी न किसी संस्थानों के माध्यम से किया जाता है। आज लगभग सभी सामाजिक कार्यों का संस्थाकरण किया जा चुका है या किया जा रहा है चाहे वह व्यवसाय हो, अनुसधांन हो, स्वास्थ्य सेवा हो, आर्थिक कार्यक्रम हो, पर्यावरण की सुरक्षा हो, प्रतिरक्षा की व्यवस्था हो, उद्योग की व्यवस्था हो, या शैक्षिक व्यवस्था आदि हो तथा इन सभी संस्थाओं के विकास के लिए आवश्यक है ज्ञान एवं सूचना। ये ज्ञान एवं सूचनाएँ पुस्तकालय नामक संस्था से ही भली–भांति प्राप्त किये जा सकते हैं। वर्तमान में सूचना प्रौद्योगिकी के चमत्कारिक विकास और नित्यप्रति सूचनाओं में वृद्धि के साथ आधुनिक समाज अपने आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु सूचना समाज में तब्दील होता जा रहा है। इन सूचनाओं की प्राप्ति वह ज्ञानार्जन की औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षण संस्थाओं, अनुसंधान, सांस्कृतिक कार्य कलापों, आध्यात्मिकता तथा मनोरंजन आदि के लिए करता है। इन सभी क्षेत्रो में सूचना की प्राप्ति पुस्तकालयों के ही माध्यम से होती है क्योंकि पुस्तकालय ही ज्ञान तथा सूचना की व्यवस्था सुसंगठित, सुव्यवस्थित एवं क्रमबद्ध रूप में अपने संग्रहण, भण्डारण, प्रक्रियाकरण, व्यवस्थापन तथा वितरण एवं प्रसार द्वारा करते हैं।

आधुनिक समाज अपने सदस्य के सुशिक्षित,योग्य एव दायित्वपूर्ण नागरिको के निर्माण की आवश्यकता महसूस करता है। समाज को आर्थिक रूप से प्रबल बनाना भी एक लक्ष्य होता है। साथ ही साथ उसे केवल उसे रोटी की ही आवश्यकता नही होती अपितु उसमें अनेक प्रगाढ़ एवं सूक्ष्म प्रवृत्तियाँ होती हैं उन्हें भी संतुष्ट करना होता है। जैसे आध्यात्मिक और वैचारिक, सांस्कृतिक सौन्दर्य, प्रजातांत्रिक, पारिवारिक मूल्य, सामर्थ्य आदि। इन प्रवृत्तियों को सुसंस्कृत एवं उन्नतशील बनाने का कार्य पुस्तकालय संस्था द्वारा ही संभव है। अवकाश के क्षणों में भी मनोरंजन हेतु पुस्तकालय के प्रलेख महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मानव को रचनात्मक एवं प्रतिस्पर्धी गतिविधियों में संलग्न कर नकारात्मक एवं विध्वंसात्मक गतिविधियों से मुक्त रखने हेतु सहायक सामग्री की उपलब्धता पुस्तकालय द्वारा ही की जा सकती है। जीवन का लक्ष्य समाज को विकसित करना है। जिससे सुसंस्कृत,सम्पन्न एवं पूर्ण जीवन व्यतीत किया जा सके। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक व्यवस्था करना समाज के सदस्यों का सामूहिक दायित्व एवं कर्तव्य है। दायित्वों की पूर्ति हेतु समाज ने अनेक संस्थाओ की स्थापना की है जैसे– विद्यालय,महाविद्यालय ,विश्वविद्यालय, शोध संस्थाएं, सांस्कृतिक संस्थाए, ललित कला संस्थान, नाट्य संस्थान, फिल्म संस्थान, खेलकूद संस्थान, चिकित्सा संस्थान, सैन्य एवं पुलिस संस्थान, विधि संस्थान, तकनीकी संस्थान, व्यापारिक और औद्यौगिक संस्थान, बैंकिंग संस्थान, प्रबन्ध संस्थान यातायात संस्थान, संचार संस्थान इत्यादि प्रमुख हैं। हमारा पुस्तकालय भी इसी प्रकार का संस्थान है। लेकिन उपर्युक्त उल्लिखित प्रत्येक संस्था समाज की कुछ गिनी–चुनी अथवा विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति करने का प्रयास करता है जबकि पुस्तकालय सभी प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। जैसे –

1. धार्मिक एवं आध्यात्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति में पुस्कालयः–समाज का कर्तव्य है कि वह अपने सदस्यों में विभिन्न धर्मों के प्रति समझदारी तथा सहिष्णुता का विकास करे, ईश्वरीय व्यवस्था में विकास जागृत करे, सदव्यहार सदाचार हेतु प्रयत्न करें तथा मानव प्रेम, सहानुभूति आत्मविश्वास, साहस ,शान्तिप्रियता, समानता तथा भ्रातृत्व से युक्त

* शोध छात्र (शिक्षा शास्त्र) एम0एल0के0पी0जी0कालेज,बलरामपुर(उ0प्र0)
**वरिष्ठ प्रवक्ता, बी0एड0 विभाग एम0एल0के0पी0जी0कालेज,बलरामपुर(उ0प्र0)

Scanned with OKEN Scanner

आध्यात्मिक एवं धार्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रयत्न करें। इसके लिए पुस्तकालय में आध्यात्मिक एवं पुस्तकें, सैद्धान्तिक दृष्टिकोण एवं विचारधाराओं का प्रतिपादन करने वाली पुस्तकें तथा अन्य शाश्वत मू पुस्तकें जो क्लासिक्स कहलाती है, आदि को स्थान दे। इससे अध्येताओं की आध्यात्मिक धार्मिक तथा वैचा नैतिक पिपासा शांत होती है। प्रत्येक पुस्तकालय में धार्मिकता तथा आध्यत्मिकता का प्रतिनिधित्व करने वाले को अवश्य रखना चाहिए जिससे लोगो को उच्च आदर्शों हेतु प्रेरित किया जा सके।

2. **सांस्कृतिक विकास में पुस्तकालयः**– सामाजिक संचेतना को जागृत करने हेतु नाटक, नृत्य, साहित्य, चित्रकला, संगीत, आदि का मानव जीवन में विशेष महत्व है। इसके अतिरिक्त समाज में प्रचलित रीतियां परम्पराएं, लोक भावनाएं आदि भी सांस्कृतिक विकास में सहायक होती हैं तथा समाज को एक सकारात्मक प्रदान करती हैं। मानव जाति की इन सांस्कृतिक धरोहरों एवं उपलब्धियों को सुरक्षित रखने का कार्य पुस्त अपने पुस्तकों तथा अन्य प्रलेखों के माध्यम से करता है। पुस्तकालय इन पुस्तकों को न केवल सुलभ क बल्कि लोगों की सृर्जनात्मक प्रतिभा की अभिव्यक्ति में भी सहायक सिद्ध होते हैं। संगीत, समारोह, नृत्य, चित्रकला,प्रदर्शनी आदि मानव समुदाय के सांस्कृतिक जीवन को समृद्ध बनाते है तथा इस तरह का क आयोजित करना सार्वजनिक पुस्तकलयों की उपादेयता को भी बढ़ाते हैं।

3. **मनोरंजन एवं अवकाश के क्षणों में पुस्तकालयः**– भारतीय समाज में अवकाश के समय के दुरूपयोग की स बहुत विकट है। अवकाश से तात्पर्य है खाली समय अर्थात वह समय जब व्यक्ति के पास किसी प्रकार का पारिवारिक, सामाजिक अथवा व्यावसायिक कार्य न हो। वेब्सटर्स डिक्शनरी में अवकाश शब्द का अर्थ है– अथवा कर्तव्य कार्यो से मुक्त। वहीं एस0आर0 रंगानाथन ने फुर्सत के समय अवकाश को परिभाषित करते हुए अवकाश का तात्पर्य ऐसे समय से है जिसमें व्यक्ति अपनी शारीरिक, आर्थिक, स्वास्थ्य सम्बंधी तथा आध्यात्मिक श के अभिभूत होकर किसी कार्य को न करें"। किन्तु भारतीय समाज में व्यक्ति खाली समय में प्रमाद से ग्रस्त रहता है कोई रचनात्मक कार्य नहीं करता है। आचार्य विनोबा भावे भी इसी उद्योगहीनता एवं अकर्मण्यता को भारतीय स के लिए सबसे बडा अभिशाप मानते हैं। किन्तु यदि हम अवकाश के अनमोल समय का सदुपयोग किसी रचना कार्य में करें तो कितना सामाजिक एवं राष्ट्रीय उत्थान होगा इसका सहज अनुमान लगाया जा सकता है। किसी समुदाय के सदस्यों के द्वारा अवकाश के समय का स्वस्थ सदुपयोग महत्वपूर्ण है तथा पुस्कालय इसमें भूमिका निभाता है। पुस्तकालयों द्वारा उपयोक्ताओं को मनोरंजनात्मक एवं रचनात्मक आवश्यकताओं की तुष्टि उपयुक्त पुस्तकें तथा प्रलेखों की व्यवस्था की जानी चाहिए। उपन्यास, कलाकृतियां, भ्रमण–साहित्य,जीव नाटक, काव्य संग्रह,लोकप्रिय पात्रिकाएं,वर्तमान में प्रकाशित पत्रिकाएं आदि उपलब्ध कराकर मानव के मनोरंजन व्यवस्था करनी चाहिए। पुस्कालय में प्रलेख संग्रह में इसकी प्रचुरता तथा सहज सुलभता होनी चाहिए जि प्रयोक्ता अपने अवकाश के क्षणों का सदुपयोग कर सामाजिक तथा राष्ट्रीय उत्थान में सहयोग कर सके इ अलावा पुस्कालयों में विशेषतः सार्वजनिक पुस्तकालयों में स्वस्थ मनोरंजन एवं मनोविनोद के कार्यक्रमों जैसे सं समारोह, कला प्रर्दशनी आदि का आयोजन भी किया जाना चाहिए।

4. **ज्ञान एवं सूचना प्रसार में पुस्तकालयः**– पुस्तकों एवं प्रलेखों के सुव्यस्थित एवं वर्गीकृत संग्रह के माध्यम पुस्तकालय ज्ञान एवं सूचना के विशाल भण्डार का निमार्ण कराते है। किसी भी मानवीय गतिविधि एवं क्रिया–क को सफलता पूर्वक संचालित करने के लिए सूचना एक आवश्यक उपादान और संसाधन है। शोधार्थी,शिक्षक, औद्योगिकी एवं व्यापारिक प्रबंधक, शिल्पी, उद्यमी,कृषक, कारखाना श्रमिक इत्यादि सभी को सूचना की आवश्यक होती है जिससे वे अपने व्यवसाय में सफलता पाने के लिए अपने को अत्यधिक सक्षम बना सके। पुस्तकाल सूचनाप्रद सामग्रियों का संग्रह सुसगंत तथा सुव्यवस्थित रूप में करते हैं। इसलिए इन्हें सूचना केन्द्र की भी सं

Scanned with OKEN Scanner

दी जाती है। लोगों की सामाजिक एवं आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के भी लिए सूचना प्रदान करने का कार्य पुस्तकालय ही करता है। दूसरे शब्दों में पुस्तकालय की सूचनात्मक भूमिका होती है। पुस्तकालय रोजगार चयन से भी संबंधित सूचना तथा संबंधित पुस्तकें रखते हैं। किसी उद्यम,कैरियर तथा अन्य रोजगार परक सूचनाएँ तथा पुस्तकें सुसज्जित तथा सुव्यस्थित रूप में पुस्तकालय में मिलती हैं। साथ ही समुदाय के सदस्यों की वर्तमान तथा संभावित मांग के अनुरूप सूचना उपलब्ध कराना पुस्तकालय का दायित्व है तथा वह इसका बखूबी निर्वहन भी करता है।

शोध एवं अनुसंधानिक क्रिया कलापों में पुस्तकालय:—शोध कार्य से विशिष्टीकरण के क्षेत्र में सृजनात्मक कार्यों की श्रेष्ठतम अभिव्यक्ति होती है तथा ज्ञान के क्षितिज विस्तृत होते हैं। उनके परिणामों से जीवन-स्तर में सुधार का प्रयत्न या ज्ञान के विकास का प्रतिबिम्बन होता है तथा पुस्तकालय इस महत्वपूर्ण कार्य में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। शोध की सफलता एवं पूर्णता के लिए उपलब्ध ज्ञान एवं सूचना की प्राप्ति तथा जानकारी अति आवश्यक होती है। दूसरे शब्दों में शोध से संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों, पत्र पत्रिकाओं, अनुसंधान प्रतिवेदनों, पूर्व में हुए शोध कार्यों की प्रति तथा अन्य प्रकाशनों के माध्यम से किया जाता है। शोध की गतिविधियों एवं कार्यक्रमों को प्रोत्साहन पुस्तकालयों के प्रकाशनों के सबल संकलन से ही हो पाता है। शोध की दिशा में विश्वविद्यालयी पुस्तकालयों, शोध संगठनों एवं संस्थानों तथा उपक्रमों के शोध एवं विकास हेतु विभागीय पुस्तकालय का योगदान सर्वाधिक होता है। शोध की दृष्टि से कोई भी पुस्तकालय उपयोगी सिद्ध हो सकता है। मानविकी तथा सामाजिक विज्ञान के क्षेत्रों में अनुसंधान हेतु सार्वजनिक पुस्तकालय की भूमिका तथा नजदीक स्थित विश्वविद्यालयों के जर्नल्स के आदान–प्रदान का कार्य भी महत्वपूर्ण भी होता है।

अनौपचारिक शिक्षा एवं पुस्तकालय:— जीवन के प्रतिदिन के व्यवहार तथा दैनिक घटनाओं के माध्यम से प्राप्त अनुभवों के आधार पर पारस्परिक क्रिया एवं अनुकरण करके जो कुछ बालक/व्यक्ति सीखता है उसे अनौपचारिक शिक्षा कहते हैं। अर्थात बालक सामाजिक तथा सांस्कृतिक वातावरण के प्रभाव से अनौपचारिक शिक्षा सहज रूप से प्राप्त करता है। एक प्रकार से अनौपचारिक शिक्षा प्रक्रिया में शिक्षक का योगदान निम्नतम होता है। किन्तु पुस्तकालयों की भूमिका मुख्य होती है। इसमें छात्रों को स्वध्याय के माध्यम से ज्ञानार्जन करना पडता है। इस दिशा में सार्वजनिक पुस्तकालयों को अपना महत्वपूर्ण योगदान देना पडता है। पुस्तकालयों को इस प्रकार की सुविधा तथा पुस्तकें उपलब्ध करानी चाहिए कि मूल एवं प्राथमिक उपयोक्तओं को लाभ हो सके। एक निकाय के रूप में पुस्तकालयों को ऐसे केन्द्रो की स्थापना करनी चाहिए कि शैक्षणिक समुदाय के साथ–साथ अनौपचारिक शिक्षा के छात्रों को भी उन संस्थाओं और केन्द्रो के उपयोग की अनुमति मिल सके फिर भी अनौपचारिक शिक्षा के लिए वांछित सहायता एवं सुविधा जुटाने का मुख्य दायित्व सार्वजनिक पुस्तकालयों का ही होता है। इस तरह के छात्रों की आवश्यकता के अनुरूप पुस्तकों, प्रलेखों एवं पत्र, पत्रिकाओं का संग्रहन करना चाहिए।

निरक्षरों की शिक्षा में पुस्तकालय:–

निरक्षरता व्यक्ति की प्रगति और देश के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में गंभीर बाधा है। किन्तु निरक्षर और निर्धन व्यक्ति भी साक्षरता, संवाद और कर्म के माध्यम से अपने विकास की ओर अग्रसर हो सकते हैं। साक्षरता ही शिक्षा का एक माध्यम है और इससे वंचित होना सबसे बडी असुविधा है, किन्तु अब साक्षरता कार्यक्रम तथा अनेक प्रभावशाली साधनों, श्रव्य दृष्य साधनों, विडियो टेप आदि के माध्यम से शिक्षा को प्रत्येक घर के दरवाजे

Scanned with OKEN Scanner

तक लाना सर्वथा सम्भव हो गया है। इन साधनों के माध्यम से समुदाय के निरक्षर लोगों को साक्षर क तथा शिक्षा देना सार्वजनिक पुस्तकालयों का दायित्व है। भारत जैसे देश में निरक्षरता आज भी मौजूद है। इ साक्षरता के कार्य को पूरा करने के लिए सार्वजनिक पुस्तकालयों को इससे संबंधित साहित्य उपलब्ध कराने लिए स्वंय को तैयार करना होगा।

8. काम-काजी समूहो की शिक्षा में पुस्तकालय :-

विभिन्न कार्य क्षेत्र से संबंधित विभिन्न व्यवसायों में संलग्न लोगों के लिए आवश्यकता अनुसार पुस्तकों का संग्र पुस्तकालय को करना चाहिए जिससे संबंधित व्यक्ति अपनी कार्य कुशलता बढ़ाये तथा उत्पादकता में वृद्धि हो इस सम्बंध में विशिष्ट पुस्तकालय की स्थापना की जा सकती है। ये विशिष्ट पुस्तकालय संगठनात्मक उद्देश्य को पूरा करने में तथा सक्षम बनाने के लिए अपने पैत्रृक संगठन को सूचना उपलब्ध कराते हैं। इन विशि पुस्तकालयों की तथा बाल पत्रिकाएं जैसे चिल्ड्रेन वर्ल्डस, चंदामामा, दिविंकल,चंपक,आदि रखना चाहिए। मॉड ,चार्ट, ग्लोब,खिलौने,फोटो ग्राफ तथा खेल से संबधित साफ्टवेयर वाला कम्प्यूटर रखना विद्यालय पुस्तकाल की उपयोगिता को बढाता है।

माध्यमिक विद्यालयों के पुस्तकालयों से छात्रों को पुस्तकालय का उपयोग करने की रूचि जागृत कर का प्रयास, आनन्द प्राप्ति, सामान्य ज्ञान तथा मनोरंजन प्राप्त करने के लिए अवसर मिलता है। छात्र सन्द पुस्तकों तथा अन्य सामग्री में से किसी भी विषय पर सूचना ढूढ़ सके आदि क्षमता का विकास होता है। इ स्तर पर प्रत्येक विषय की पाठय पुस्तकें, उच्च स्तरीय पुस्तकें, विज्ञान की पुस्तकें,यात्रा वृतांत, जीवनी तथ भौगोलिक खोज यात्रा की पुस्तकें रखी जानी चाहिए। स्तरीय बाल साहित्य, गल्प साहित्य, लघु कथा संग्र विश्वकोष वार्षिकी, दृश्य-श्रव्य सामग्री आदि रखी जाती है।

1. महाविद्यालय पुस्तकालयः-

शिक्षा प्रक्रिया में महाविद्यालय की भूमिका काफी महत्वपूर्ण होती है महाविद्यालय में पुस्तकालय द्वारा छात्रों विभिन्न विषयों की गहन समझ विकसित करने तथा उन्हें उच्चतर अध्ययन के लिए तत्पर करने का कार्य किय जाता है। महाविद्यालय के पुस्तकालय महाविद्यालय के छात्रों को देश की सेवा हेतु विभिन्न विभागों के योग्य बनाते है और इसके लिए उन्हें अधिक से अधिक प्रलेख, पुस्तकें सामयिकी आदि उपलब्ध कराते हैं। शोध छात्र तथा प्राध्यापकों को विषय से संबंधित ग्रन्थ सामग्री महाविद्यालय पुस्तकालय द्वारा उपलब्ध करायी जाती है। युवक एवं युवतियों के लिए महाविद्यालय में प्रवेश एक रोमांचकारी घटना होती है। महाविद्यालय का विस्तृ पाठ्यक्रम व्याख्यानों के अलावा ज्ञानप्राप्ति,खाली समय का उपयोग आदि तत्वों के द्वारा आत्मनिर्भर बनने महाविद्यालय पुस्तकालय युवक एवं युवतियों की भरपूर मदद करते हैं तथा उनमें जीवन से जूझने का जज कूट-कूट कर भरते हैं महाविद्यालय में छात्रों तथा अध्यापकों दोनो के लिए पढ़ाये जाने वाले विविध विषयों विभिन्न उच्च स्तरीय पुस्तकों का होना आवश्यक है तो दूसरी तरफ पाठ्येत्तर पुस्तकें भी होनी चाहिए। प्रत्येक दस पाठकों हेतु एक पुस्तक, अध्यापकों तथा बुद्धिमान विद्यार्थियों हेतु उच्चस्तरीय पुस्तकें, विविध कोटि के सन्दर्भ ग्रन्थ, विश्वकोष, भाषा, एवं विषय कोष हैण्डबुक मैनुआल भौगोलिक साहित्य रोजगार हैण्डबुक प्रतियोगिता की तैयारी के प्रलेख, सामान्य ज्ञान गजट तथा एटलस आदि होने चाहिए। कला पुस्तकें उपन्यास कहानी चि पत्र पत्रिकाएं तथा पुराने अंक, फिल्में, चित्र, कम्प्यूटर अधारित शिक्षण सामग्री भी हो।

1. विश्वविद्यालय पुस्तकालयः-किसी देश की उच्च शिक्षा की स्थिति को उसके भविष्य का सर्वाधिक महत्वपू संकेत कहा जा सकता है तथा उस उच्च शिक्षा के केन्द्र बिन्दु विश्वविद्यालय होते हैं। नये ज्ञान की खोज त शोध का कार्य ये विश्वविद्यालय करते हैं। इन शोध एवं अनुसंधान कार्यो में विश्वविद्यालय पुस्तकालय महत्वपू

Scanned with OKEN Scanner

भूमिका निभाते है। विश्वविद्यालय पुस्तकालय के महत्त्व के बारे में इतना ही कहना पर्याप्त है कि विश्वविद्यालय विहीन पुस्तकालय का अस्तित्व हो सकता है किन्तु पुस्तकालय विहीन विश्वविद्यालय के अस्तित्व की कल्पना तक नहीं की जा सकती। वर्तमान में देश में 306 विश्वविद्यालय स्तर की संस्थाए (89 डीम्ड विश्वविद्यालय सहित) हैं। 18 केन्द्रीय विश्वविद्यालय व 186 राज्य विश्वविद्यालय हैं। 38 विश्वविद्यालय कृषि की शिक्षा देते हैं तथा चिकित्सा, इंजीयनियरिंग और टेक्नोलॉजी और सूचना प्रौद्योगिकी की शिक्षा देने वाले विश्वविद्यालयों की संख्या क्रमशः 21, 44 तथा 04 है। खुले विश्वविद्यालय की संख्या 11 है जबकि महिला विश्वविद्यालय की संख्या 05 है। विश्वविद्यालयो में प्रविष्ट छात्रों की संख्या 88 लाख है जबकि शिक्षकों की संख्या 4 लाख से अधिक है। इन विश्वविद्यालायो की संख्या में वृद्धि से अनेक सामाजिक तथा बौद्धिक आयाम जुड़े हैं जैसे–छात्रों की संख्या में वृद्धि अनेक नये विभागों का गठन, लक्ष्योंन्मुख शोध परियोजनायें इत्यादि। इन सारे तत्वों ने विश्वविद्यालय पुस्तकालयों पर गहरा प्रभाव डाला है। आज विश्वविद्यालय पुस्तकालयों को बडी चुनौतियों से जूझने की कठिन भूमिका निभानी है क्योंकि सीमित अनुदान में अधिकाधिक विषयेां से संबंधित उच्च स्तरीय ज्ञान तथा सूचना वाले पुस्तकेां का अधिग्रहण करना तथा उसे पाठकों को उपलब्ध कराना है।

विश्वविद्यालय पुस्तकालय विश्वविद्यालय का हृदय है यह पुस्तकालय छात्रों को शासन, उद्योग, स्वास्थ्य, इंजीनियरिंग, विधि, रक्षा, शिक्षा,कृषि प्रबन्धन आदि क्षेत्रों में नेतृत्व करने की क्षमता प्रदान करता है तो दूसरी तरफ इन क्षेत्रों में शोध करने तथा उन शोधों के परिणामों से जनजीवन को उन्नत करने का कार्य भी करता है। ये पुस्तकालय भावी पीढी के लिए ज्ञान तथा विचारों का संरक्षण अपने प्रलेखों के माध्यम से करते हैं। सामाजिक न्याय, सहिष्णुता, राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहित करना विश्वविद्यालय पुस्तकालय ही करते हैं। विश्वविद्यालय पुस्तकालय का प्रलेख संग्रह ज्ञान एवं शिक्षा तथा शोध संबंधी आवश्कताओं को पूरा करना, नये विचारों को पनपने तथा नवीन ज्ञान तथा प्रकाशनों को उपलब्ध कराने का कार्य करता है। संक्षेप में, विश्वविद्यालय के प्रमुख कार्यो ज्ञान प्राप्ति तथा शिक्षण शोध कार्य तथा नवीन ज्ञान का सृजन, शोध परिणामों का प्रकाशन तथा प्रसार, ज्ञान तथा विचारों का संरक्षण तथा विस्तार कार्य एवं सेवाओ में विश्वविद्यालय पुस्तकालय महत्त्वपूर्ण भमिका निभाता है। विश्वविद्यालय पुस्तकालय से पाठकों का एक बहुत बडा वर्ग जुडता है तथा लाभान्वित होता है जिसमें विभिन्न विषयेां के विभिन्न स्तर के छात्र तथा अध्यापक, एम.फिल., पी0एच0डी0तथा डी–लिट. कर रहे शोध छात्र, शोध निदेशक तथा संबद्ध प्रोफेसर, विश्वविद्यालय के प्रशासनिक विभाग, प्रबंधकगण, लघु तथा वृहद शोध परियोजना के व्यक्ति, बाहरी विद्वान तथा अन्य लोग शामिल है। निष्कर्षतः आधुनिक समाज तथा विभिन्न स्तर के शैक्षिक संस्थानों के भविष्य निमार्ण, व्यावासायिक वृद्धि तथा अन्य आवश्यक कार्यो को पूरा करने में पुस्तकालय महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं तथा उत्तरदायित्वों का निर्वहन करते है।

erence-

Khanna, J.K. (1987): Library and Society. Kurukshetra: Research Publications.

Despandey, K.S. (1985): University Library system in india. New Delhi.Sterling

Ranganathan, S.R. (1973): New Educational School Library New Delhi.Vikas Publictions.

Role and Function of a School Library (1989): New Delhi, National Book Trust India(folder)

Yeland, M.A. (1974): University Libraries in Devoloping Countries. Delhi University of Delhi.

महेन्द्र नाथ (1998): पुस्तकालय और समाज जयपुर पोइन्टर पब्लिशर्स

शर्मा, पाण्डेय एस0के0(1998): पुस्तकालय और समाज, नई दिल्ली ग्रंथ अकादमी

सैनी, ओम प्रकाश (1999): ग्रंथलाय एवं समाज, आगराः वाई के पब्लिशर्स

पाण्डेय, आर एस.(2008): भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्याएं, अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा–7

पुस्तकालय और समाज (खण्ड) (2001): उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,इलाहाबाद।

शर्मा बी.के., शर्मा, एम0के0 द्विवेदी, एम.पी.: सतत् शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.

Scanned with OKEN Scanner